RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 सितम्बर 2021

बाल विज्ञान पत्रिका, सितम्बर 2021

चकमक

मूल्य ₹50

मेरा पन्ना

हमेशा की तरह इस बार भी नवम्बर अंक 'विशेषांक' होगा। इसमें तुम्हारी रचनाओं के ढेर सारे पन्ने होंगे।

तो मेरा पन्ना कॉलम के लिए अपनी लिखी/बनाई ऐसी रचनाएँ (कविता, कहानी, लेख, चित्र, पेंटिंग आदि) भेजो जो तुमने अपने खुद के अवलोकन या कल्पना से रची हो। इसके अलावा नवम्बर अंक के लिए तुम इन विषयों पर भी लिख सकते हो:

- हम सभी कभी ना कभी किसी काम/चीज़ से बचने के लिए बहाने बनाते हैं। तुमने भी कभी ना कभी ऐसा किया होगा। अपने ऐसे ही किसी बहाने के बारे में लिखो जो काम कर गया हो। चाहो तो चित्र या कॉमिक के ज़रिए भी इसे बता सकते हो।

- ऐसे बहुत-से लोग हैं जो रोज़मर्रा के जीवन में हमारी अलग-अलग तरह से मदद करते हैं, जैसे कि दूधवाले, सब्ज़ीवाली/सब्ज़ीवाले, अखबार वाले, किसी चीज़ की मरम्मत करने वाले, पलम्बर, मैकेनिक, घर में काम करने वाले आदि। इनमें से किसी के साथ भी एक छोटा-सा इंटरव्यू करो और हमें भेज दो। सम्भव हो तो उनकी फोटो भी खींचकर भेज सकते हो।

- जब तुम छोटे थे तो तुम्हारे बड़े लोग तुम्हें किस-किस तरह से डराते थे। लिखकर या चित्र बनाकर भेजो।

- इनके अलावा तुम मज़ेदार चुटकुले और माथापच्ची कॉलम के लिए पहेलियाँ व गणित के सवाल वगैरह भी भेज सकते हो।

चंडीगढ़ में बम नहीं गिरेगा

शाना, आठ वर्ष, चंडीगढ़, पंजाब
चकमक, अगस्त 1999

चंडीगढ़ में बम नहीं गिरेगा
जंग तो कारगिल में चल रही है ना
अगर चंडीगढ़ में गिरे तो भी
सैनिक अड्डों पर ही गिरेगा
वो तो चंडी मन्दिर और सेक्टर में हैं
मैं जिन्दा रहूँगी
वैसे चंडीगढ़ पाकिस्तान में होता
तो क्या हो जाता
लोगों का सुखी रहना ज़रूरी है
मैं मरना नहीं चाहती
दुनिया के उन इलाकों में
जहाँ जंग नहीं है
बच्चे बड़े होंगे
मेरे यहाँ बम गिरेगा
तो मैं मर जाऊँगी
मैं मरना नहीं चाहती

चित्र: प्रीति, चकमक, अक्टूबर 2008

मेरा पन्ना

तुम्हारे जवाब हम तक 30 सितम्बर तक पहुँच जाएँ तो बहुत बढ़िया होगा। जवाब तुम chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो अथवा 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। रचना के साथ अपना नाम, कक्षा या उम्र व पता ज़रूर लिखना।

तुम्हारी रचनाओं का इन्तज़ार रहेगा।

चकमक

अंक 420 • सितम्बर 2021

चकमक

चित्र: अवन्ती साखरे, पहली, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

इस बार

बतखोरू - वीरेन्द्र दुबे - 4
क्यों-क्यों - 6
मेरा पन्ना - 8
नन्हा राजकुमार - एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी - 10
तुम भी बनाओ - कनक शशि - 13
पेड़ क्या करता है - राजेश जोशी - 14
तालाबन्दी में बचपन - अस्पताल और कोरोना का डर - आरुषि - 16
माथापच्ची - 20
कल शाम जेल में हुई सबसे अनोखी घटना - देवांगना कलिता - 21
टर्र-टर्र - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन - 24
जिन्न ऐसे होते हैं? - मोहम्मद अरशद खान - 26
गणित है मज़ेदार - चन्दा, शतरंज...भाग - 2 - आलोका कान्हेरे - 30
मेरा पन्ना - 32
तुम भी जानो - 39
चित्रपहेली - 40
भूलभुलैया - 43
डिस्को डाँसर मेंढक - रोहन चक्रवर्ती - 44

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव
भाविनी पन्त

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

आवरण चित्र: निथुनिका, चौथी, द येलो ट्रेन स्कूल, कोयम्बटूर, तमिलनाडु

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

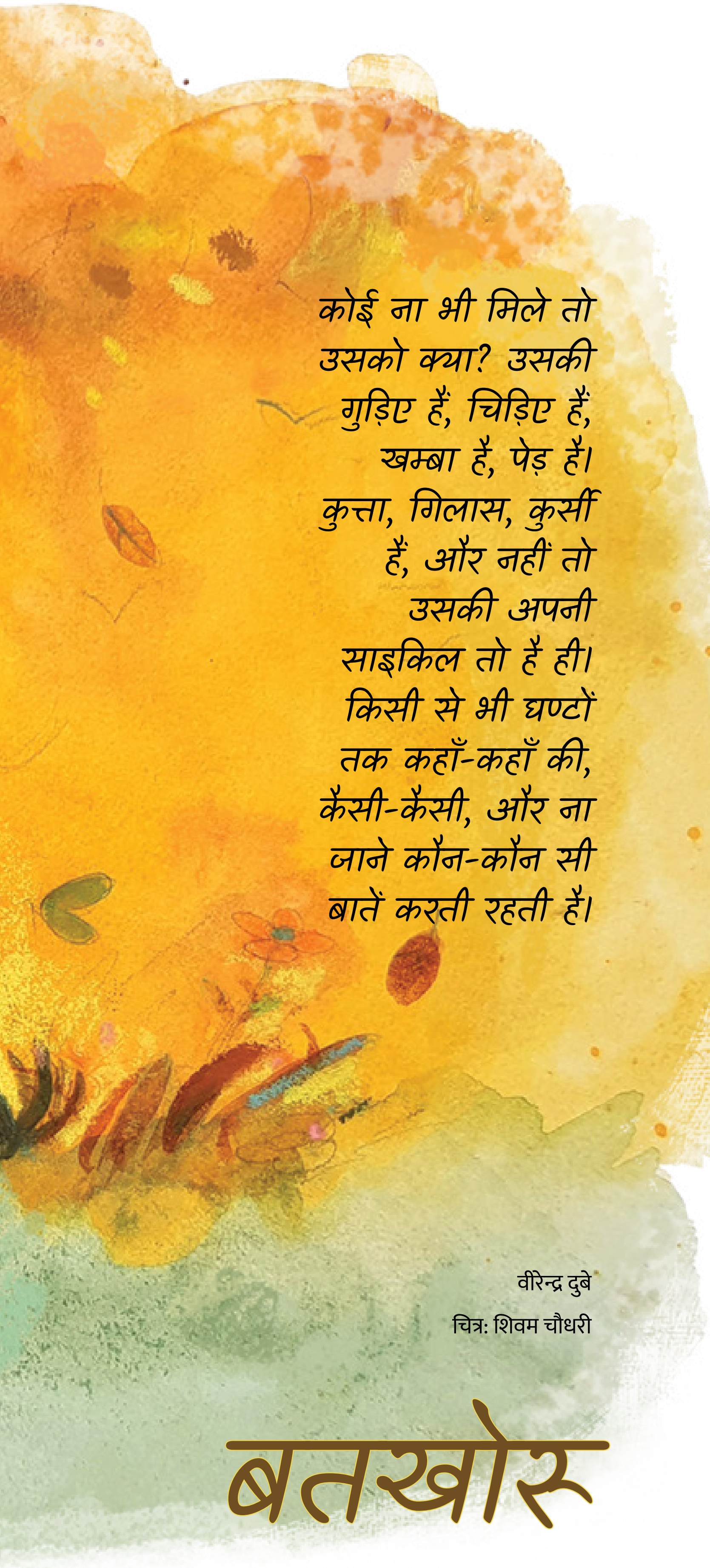

बतखोरू

वीरेन्द्र दुबे

चित्र: शिवम चौधरी

स्कूल में तो उसका नाम बबीता है। पर दादी की देखा-देखी सब उसे 'बतखोरू' कहते। पहले तो वह इस पर चिढ़ जाती थी। पर अब उसे अच्छा ही लगता है जब उसे कोई बतखोरू कहकर बुलाता है। अब तो उसे बबीता अटपटा लगता।

वह दिन भर बक-बक करती रहती है। कोई सुने या ना सुने, उसकी बला से। इससे उसका क्या? अपने में मगन, खुद से ही बतियाती रहती है। है भी इतनी चुलबुली कि कोई ना कोई बोलने-बतियाने लगता। बातें ही इतनी मज़ेदार करती।

कोई ना भी मिले तो उसको क्या? उसकी गुड़िए हैं, चिड़िए हैं, खम्बा है, पेड़ है। कुत्ता, गिलास, कुर्सी हैं, और नहीं तो उसकी अपनी साइकिल तो है ही। किसी से भी घण्टों तक कहाँ-कहाँ की, कैसी-कैसी, और ना जाने कौन-कौन सी बातें करती रहती है।

कोई ना भी मिले तो उसको क्या? उसकी गुड़िए हैं, चिड़िए हैं, खम्बा है, पेड़ है। कुत्ता, गिलास, कुर्सी हैं, और नहीं तो उसकी अपनी साइकिल तो है ही। किसी से भी घण्टों तक कहाँ-कहाँ की, कैसी-कैसी, और ना जाने कौन-कौन सी बातें करती रहती है।

सवाल भी खुद ही करती और उनकी तरफ से लम्बे-लम्बे जवाब भी खुद ही देती चलती। कभी उनकी तरफ से हामी भरती, कभी मनाही करती। वह भी हाथ हिला-हिलाकर, कभी नाक-भौं चढ़ाकर तो कभी सिकोड़कर। कभी ज़ोर-से ठहाका मारकर खिलखिलाने लगती। कभी कहती, “कितनी बात करते हो, सिर खाते रहते हो। चुप भी रहा करो, मुँह नहीं थकता क्या।” फिर ज़ोर-से हँसती।

घर के लोग तो उसकी इन हरकतों के आदी हो गए थे। पर आने-जाने वाले बहुत बार ठिठक जाते। उनको यह अजीब-सा लगता। कभी-कभार कोई गौर-से सुनता कि क्या बोल रही है, तो सोच में पड़ जाता कि कहीं इसको कोई दिमागी बीमारी तो नहीं है? पर दादी के कड़क मिज़ाज के चलते किसी की एक ना चलती। उलटे डपट देतीं वें। बकबक करती हूँ तो क्या मैं पागल हूँ?

क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

पिछले अंक में तुमने ग्राफिटी पर एक लेख (तोड़-फोड़ की कला) पढ़ा होगा। अगर तुम्हें कहीं ग्राफिटी बनाने का मौका मिलता तो तुम क्या लिखते या उकेरते, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

मेरा जो भी उस टाइम पर मन करेगा, वही बनाऊँगी।

श्रेया गुप्ता, आठवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मैं ग्राफिटी वहाँ बनाऊँगी जहाँ लोग ज़्यादा आएँगे और मैं एक छोटी-सी चिड़िया की बच्ची मेरे पास बनाऊँगी क्योंकि मैं दिखाना चाहूँगी कि हमें जानवरों से भी प्यार करना चाहिए। हमें जानवरों को मारना नहीं चाहिए। अगर हम जानवरों को नहीं मारेंगे तो वे हम पर हमला नहीं करेंगे।

आरुषि कलूंडा, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी विद्यालय, मातली, उत्तराखण्ड

मैं पानी बचाने की ग्राफिटी बनाऊँगी, क्योंकि अब हमारे पास बहुत कम पानी है। रोड पर आते-जाते लोग उसको देखेंगे तो अपने आप में सुधार करने का सोचेंगे।

एंजेलीना सोजी, आठवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मैं डूडल बनाना पसन्द करूँगी क्योंकि मुझे डूडल बनाने में मज़ा आता है और यह मेरी भावनाएँ दिखाने में मदद करता है।

अविघ्ना रिचारिया, सातवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मैं अपने बाथरूम में ग्राफिटी बनाना चाहूँगा क्योंकि मेरा बाथरूम एकदम पीला है। और मुझे पीला कलर देखकर चक्कर आते हैं।

राजवीर चौहान, आठवीं, केरला पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

अगली बार के लिए सवाल है—

चोट लगने पर कभी गर्म सिकाई करते हैं तो कभी बर्फ लगाते हैं। ऐसा क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

चित्र: आकृति, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

मैं जहाँ ऑनलाइन क्लास करती हूँ वहाँ मेरे क्लासरूम की ग्राफिटी बनाऊँगी ताकि जब मैं ऑनलाइन क्लास करूँ तो मुझे लगे कि मैं स्कूल के क्लासरूम में हूँ।

रिद्धि रत्नावत, दसवीं, केरला पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

मैं उत्तराखण्ड की संस्कृति बनाऊँगी क्योंकि हमारे यहाँ बहुत सारे लोग आते हैं उत्तराखण्ड की संस्कृति देखने। उनको देखने को मिलेगा कि उत्तराखण्ड में पहनावा कैसा है, यहाँ घर कैसे होते हैं।

शीतल, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी विद्यालय, मातली, उत्तराखण्ड

मैं भारत में लेस्बियन-गे-बाइसेक्सुअल-ट्रांसजेंडर समूह के अधिकारों के लिए दीवारों पर ग्राफिटी बनाऊँगा क्योंकि भारत में इस चीज़ के लिए बहुत अन्याय है।

तनुष आनन्द, आठवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मेरा पन्ना

ओलम्पिक

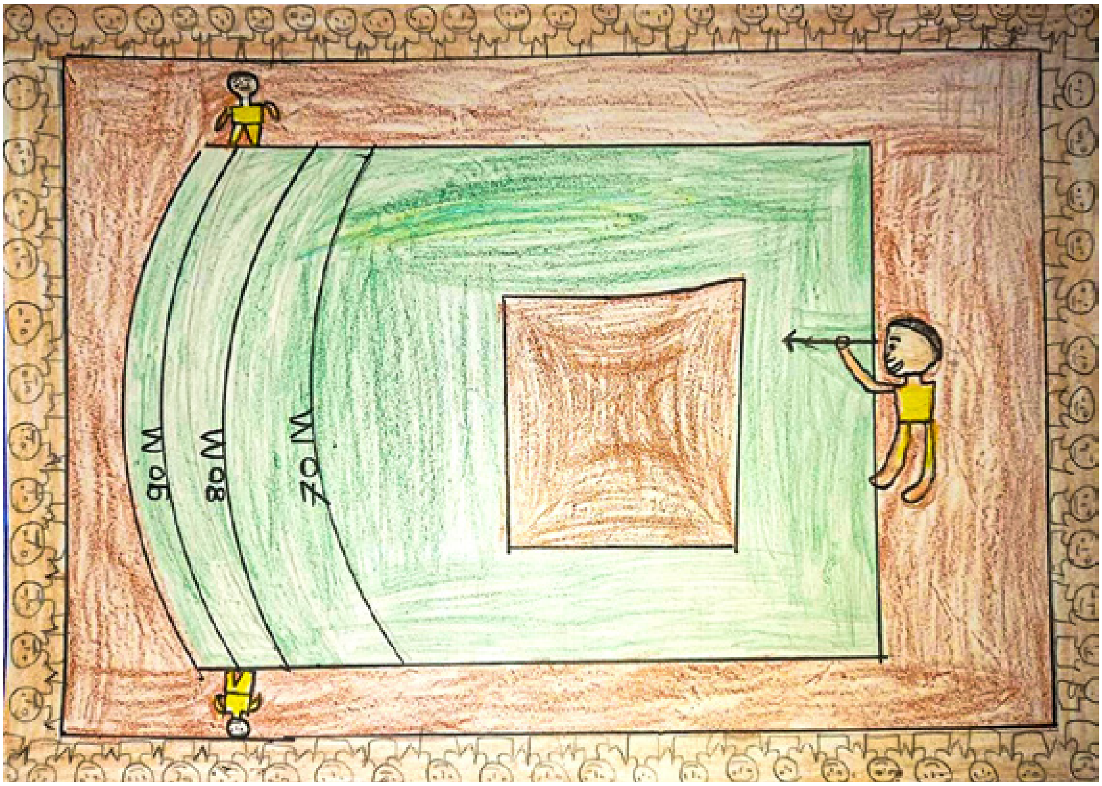

चित्र: प्रज्ञा गांधी, तीसरी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

ओलम्पिक लगभग 1050 साल पहले ग्रीस में कुछ 400 सालों के लिए हर 4 साल में खेला गया। फिर 1896 में यह दोबारा शुरू हुआ। भारत ने ओलम्पिक खेलों में पहली बार 1900 में भाग लिया। तब भारत की ओर से नॉर्मन पिट्र्चर्ड ने 200 मीटर और 400 मीटर बाधा दौड़ में सिल्वर मेडल जीते। इस बार ओलम्पिक में महिलाओं ने भी भाग लेना शुरू किया।

ओलम्पिक की प्रतियोगिताएँ ग्रीष्मकालीन, शीलकालीन प्रारूपों के अलावा यूथ ओलम्पिक (जिसमें 14 से 18 साल के युवा भाग ले सकते हैं) और पैराओलम्पिक (जिसमें विकलांग जन भाग ले सकते हैं) प्रारूपों में भी खेली जाती हैं।

2021 के ओलम्पिक में भारतीय महिला हॉकी टीम ने मेडल तो नहीं जीता लेकिन सबसे ज़्यादा प्रभावित मुझे उसी ने किया। जब मैंने जाना कि प्रत्येक खिलाड़ी ने कितनी मुश्किलों से और बिना किसी आरामदायक ज़िन्दगी के इतनी सफलता प्राप्त की है तो मुझे बहुत हैरानी हुई। यह जानकर मैं चकित था कि किसी के पिता दर्ज़ी हैं, तो किसी की माँ दूसरे के घरों में काम करती हैं। कोई किसान की, तो कोई हवलदार की बेटी है।

मैं भी स्केटिंग करता हूँ। मैंने भी कई प्रतियोगिताएँ जीती हैं। पर हमेशा मेरे मम्मी-पापा मुझे गाड़ी से लेकर जाते हैं और मुझे बहुत महँगे स्केटिंग शूज़ भी दिलवाए हैं। अब मुझे लगता है कि मेरी जीत में मुझसे ज़्यादा उनका योगदान है और मैं भी अपने देश के लिए कुछ करना चाहता हूँ।

विनायक कंसल, आठवीं, सेंट पॉल स्कूल, दिल्ली

ओलम्पिक के चिन्ह में पाँच छल्ले एक-दूसरे को जोड़ते हुए दिखते हैं, जैसे कि पाँच दोस्त एक-दूसरे के साथ खड़े हों। इस चिन्ह का अर्थ दुनिया के पाँच महाद्वीप है। इन छल्लों में विविध रंग दिखते हैं, बिलकुल उसी तरह जैसे ओलम्पिक में विविधता दिखती है। पर इस चिन्ह की तरह सब लोग साथ रहते हैं।

2021 के टोक्यो ओलम्पिक गेम्स में भारत का सैंतालीसवां स्थान रहा। लेकिन हमने 7 पदक जीते – एक स्वर्ण पदक, दो रजत और चार कांस्य पदक।

साईराम पोरे, आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा , महाराष्ट्र

मुझे पढ़ाई जितनी ही रुचि खेलों में भी है। मैं खेलों की बड़ी फैन हूँ। इसलिए मुझे मैच देखना अच्छा लगता है। ओलम्पिक तो सभी स्पर्धाओं का सरताज है। इसलिए मेरा ध्यान ओलम्पिक पर ही टिका हुआ था। कोरोना के कारण ओलम्पिक आगे बढ़ गया तो मुझे बुरा लगा। लेकिन इस साल जब मुझे पता चला कि टोक्यो ओलम्पिक 23 जुलाई से 8 अगस्त तक चलने वाले हैं तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

रात को हम न्यूज़ देखने के लिए मोबाइल लेने गए। तभी हमारे खेल शिक्षक ने ग्रुप पर मैसेज किया "भारत के नीरज चोपड़ा ने जीता स्वर्ण पदक।" उसके साथ साथ एक वीडियो क्लिप भी थी।... उस स्टेडियम में भारत का राष्ट्रगान गाया जा रहा था। वह ऐसा क्षण था जब हर भारतीय का सर गर्व से ऊँचा हो।

धनश्री सहा, दसवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: रुद्र गोसावी, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

भाग – 3

नन्हा राजकुमार

एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी
अनुवाद : लालबहादुर वर्मा

पिछले अंक में तुमने पढ़ा...
लेखक को विश्वास है कि नन्हा राजकुमार B612 ग्रह से है जिसकी खोज कुछ ही समय पहले हुई थी। छह साल हो गए उसके दोस्त को गए लेकिन लेखक को उसकी बातें याद हैं... धीरे-धारे वह अपने दोस्त के बारे में जानने लगता है। यह भी कि नन्हे राजकुमार के ग्रह के पर कुछ पौधे तो अच्छे माने जाते हैं और कुछ पौधे बुरे, जैसे कि बाओबाब। अपने दोस्त की बातों के समझने के बाद और उसके आग्रह पर लेखक ने उसके ग्रह पर होने वाले बाओबाब का एक चित्र बनाया जो काफी अच्छा बना।
अब आगे...

ओह! नन्हे राजकुमार! मैंने तेरा जीवन, उसकी उदासी धीरे-धीरे समझ ली थी। बहुत दिनों तक मेरे पास मन बहलाने का एकमात्र साधन था सूर्यास्त का सौन्दर्य। इसका पता मुझे तुझसे मुलाकात के चौथे दिन चला जब तूने मुझसे कहा, "मुझे सूर्यास्त बहुत अच्छा लगता है। आओ, चलें देखें।"

"लेकिन उसके लिए तो अभी इन्तज़ार करना होगा।"

"इन्तज़ार? इन्तज़ार किस बात का?"

"कि सूर्यास्त हो।"

तुझे बड़ा आश्चर्य था। तू अपने में हँसता हुआ बोला था।

"अरे! मैं सोच रहा था कि मैं अपने घर हूँ।"

"वास्तव में जब अमेरिका में दोपहर हो तो फ्रांस में सूर्यास्त हो रहा होता है। अगर कोई अमेरिका से तुरन्त फ्रांस पहुँच जाए तो दोपहर के फौरन बाद शाम देख सकता है। दुर्भाग्यवश दोनों के बीच की दूरी काफी है। लेकिन तेरी छोटी-सी धरती पर तुझे बस अपनी कुर्सी थोड़ी इधर-उधर खिसकाने की ज़रूरत होती होगी और तू जितनी बार चाहे सूरज का डूबना देख सकता होगा।"

"एक दिन मैंने तैतालीस बार सूर्यास्त देखा था।"

और तू फिर बोला, "जानते हो जब कोई उदास हो तो सूर्यास्त बड़ा अच्छा लगता है।"

मैंने कहा, “जिस दिन तूने तैंतालीस बार सूर्यास्त देखा उस दिन तो तू बड़ा उदास रहा होगा?” लेकिन उसने जवाब नहीं दिया।

पाँचवें दिन, सदा की तरह भेड़ की कृपा से ही, नन्हे राजकुमार के एक और रहस्य का पता चला। जैसे वह किसी समस्या पर चुपचाप बहुत देर से विचार कर रहा हो, उसने बिनी किसी भूमिका के झट-से कहा, “अगर भेड़ झाड़ खाती है तो फूल भी खा सकती है?”

“भेड़ जो भी मिल जाए खा डालती है।”

“काँटे वाले फूल भी?”

“हाँ, काँटेदार फूल भी। ”

“तो फिर काँटे किसलिए होते हैं?”

मुझे नहीं मालूम था। मेरे जहाज़ के इंजन में एक बोल्ट फँस गया था और मैं उसे निकालने में व्यस्त था। मैं बड़ी चिन्ता में था क्योंकि मरम्मत कठिन लगने लगी थी। सबसे ज़्यादा डर पानी समाप्त होने का था।

“काँटे किसलिए होते हैं?” राजकुमार एक बार प्रश्न करने पर उसे भूलता नहीं था। मैं मरम्मत में खीझा हुआ था। जो भी मुँह में आए उत्तर दे देता था।

“काँटे एकदम बेकार होते हैं। बस फूलों के प्रति दुष्टता के प्रतीक होते हैं।”

“अच्छा!”

वह थोड़ी देर तक चुप रहा। फिर झुँझलाकर उसने प्रश्नों की एक झड़ी लगा दी, “लेकिन मुझे तेरी बात पर विश्वास नहीं होता। फूल तो कोमल होते हैं, मासूम होते हैं। जैसे भी हों अपने को आश्वस्त कर लेते हैं। काँटों के होने से वे अपने को सुरक्षित समझते होंगे।”

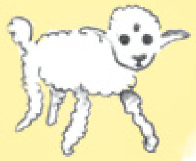

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैं सोच रहा था अगर थोड़ी देर में ठीक नहीं हुआ तो मैं इस बोल्ट पर हथौड़ा चला दूँ। उसने फिर ध्यान बँटा दिया, “और तुझे विश्वास है कि फूल...”

“नहीं, नहीं मैं कुछ नहीं जानता।” मैंने जो भी समझा जवाब दे दिया। “मैं ज़रूरी काम कर रहा हूँ।”

अकबक होकर उसने मुझे देखा, “ज़रूरी काम?”

उसने देखा कि मेरी उँगलियाँ काली हो रही थीं और मैं एक भौंडी-सी चीज़ पर हथौड़ा लिए झुका हुआ था।

“तू तो बूढ़ों जैसी बातें करता है।” मुझे थोड़ी शर्म आई। पर इस पर बिना ध्यान दिए उसने कहा, “तू सब गड्डमड्ड कर देता है... सब गड़बड़ कर देता है।”

वास्तव में वह बहुत चिढ़ा हुआ था। उसके सुनहरे बाल हवा में उड़ रहे थे।

“मैं एक ऐसे ग्रह के बारे में जानता हूँ जहाँ एक गुस्सैल-से, गुमसुम रहने वाले महाशय रहते हैं। उनका चेहरा हरदम लाल बना रहता है। उन्होंने कभी किसी से प्यार नहीं किया। कोई तारा नहीं देखा, कोई फूल नहीं सूँघा। कभी जोड़-

घटाने, हिसाब-किताब के अलावा कुछ नहीं किया। वह भी सारे दिन तेरी तरह कहता रहता है, "मैं व्यस्त हूँ – मुझे काम है" – और दम्भ से फूला रहता है। लेकिन वह भी कोई आदमी हुआ। उसे कुकुरमुत्ता कहेंगे।"

"क्या?"

"कुकुरमुत्ता।"

गुस्से-से वह नीला-पीला होने लगा।

"युग-युग से फूलों में काँटे होते चले आए हैं और फिर भेड़ फूलों को खा जाती रही हैं। यह समझने की कोशिश करना महत्वपूर्ण नहीं है क्या कि आखिर फूल एक ऐसी चीज़ को क्यों वहन करते हैं जिसका कोई इस्तेमाल ना हो? क्या इसे समझना एक गोल-मटोल लाल महाशय के जोड़-घटाने से ज़्यादा गम्भीर बात नहीं? और यदि मैं कहूँ कि मैं एक ऐसे फूल को जानता हूँ जो सिर्फ मेरी दुनिया में होता है और उसे एक भेड़ एक दिन ऐसे ही बिना सोचे-समझे चर सकती है तो यह महत्वपूर्ण बात नहीं है?" वह शर्म से लाल हो रहा था। बोला, "अगर कोई ऐसे फूल को प्यार करे जो कोटि-कोटि तारों में कहीं ना पाया जाता हो – एकदम बेमिसाल हो तो वह आसमान में फैले सितारों को निहारने मात्र से प्रसन्न हो जाएगा। लेकिन यदि उसे भेड़ चर जाए तो सारे तारे उसके लिए बुझ-से जाएँगे। और यह कोई गम्भीर बात नहीं हुई?"

"युग-युग से फूलों में काँटे होते चले आए हैं और फिर भेड़ फूलों को खा जाती रही हैं। यह समझने की कोशिश करना महत्वपूर्ण नहीं है क्या कि आखिर फूल एक ऐसी चीज़ को क्यों वहन करते हैं जिसका कोई इस्तेमाल ना हो? क्या इसे समझना एक गोल-मटोल लाल महाशय के जोड़-घटाने से ज़्यादा गम्भीर बात नहीं? और यदि मैं कहूँ कि मैं एक ऐसे फूल को जानता हूँ जो सिर्फ मेरी दुनिया में होता है और उसे एक भेड़ एक दिन ऐसे ही बिना सोचे-समझे चर सकती है तो यह महत्वपूर्ण बात नहीं है?"

इसके बाद वह कुछ नहीं कह सका। ज़ोर-से सुबकियाँ लेने लगा।

रात हो चुकी थी। मैंने अपने औज़ार रख दिए। बोल्ट, हथौड़ा, प्यास, मौत – इनका कोई अर्थ नहीं रह गया था। एक ग्रह पर, मेरी धरती पर, एक नन्हा राजकुमार था... उसे सांत्वना देनी थी। मैंने उसे बाँहों में भर लिया। उसे थपथपाया, झुलाया और बोला, "जिस फूल को तू प्यार करता है उसे कोई भय नहीं... मैं तेरी भेड़ का मुँह बन्द करने के लिए एक 'जाबा' बना दूँगा। तेरे फूल के लिए एक कवच बना दूँगा।" मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। मैं अनाड़ी लग रहा था। सोच नहीं पा रहा था कि उस तक कैसे पहुँचूं। उसे छू सकूँ...। ओह! बड़ा ही रहस्यमय है आँसुओं का संसार।

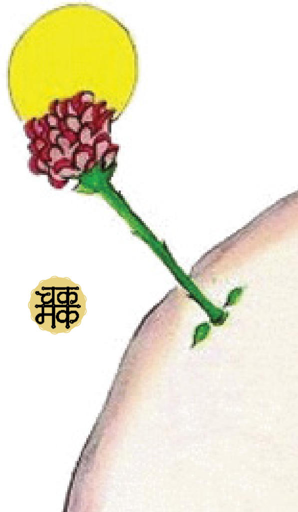

अगले अंक में जारी...

तुम भी बनाओ

इस चित्र को बनाने में रसोई में इस्तेमाल होने वाली चीज़ों और कचरे का इस्तेमाल हुआ है। अगर तुम भी ऐसा कुछ बनाते हो, तो हमें ज़रूर भेजना।

कनक शशि

चित्र: रूबी कुमारी, दसवीं, ग्राम - गोठी, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

पेड़ क्या करता है

राजेश जोशी

माँ कहती हैं
पेड़ रात में सोते हैं

तो पेड़
क्या करता है दिन भर?

हम्माल
हम्माली करता है
मजूर मजूरी

अफसर
अफसरी करता है
बाबू बाबूगिरी

और
रात गए थककर सोता है
और पेड़

पेड़ क्या करता है दिन भर?

R-10

अस्पताल और कोरोना का डर

आरुषि
चित्र: हबीब अली

शुरू के दिनों में सपना को अस्पताल आने-जाने में डर लगता था। अब उसे इसकी आदत हो चली है। उसे अक्सर वो दिन याद आते हैं जब उसने अस्पताल में काम करना शुरू किया था। सपना को रूम नम्बर सोलह में जाना था। आगे बढ़ते हुए वह कमरा ढूँढ़ रही थी। उसकी नज़र अस्पताल की गहमागहमी पर भी थी। चारों तरफ रोते-चिल्लाते मरीज़ और उनके साथ परिवार के एक या दो रिश्तेदार नज़र आ रहे थे। उनके चेहरे पर उदासी साफ दिख रही थी। उनका ध्यान कमरे को ढूँढ़ने में था।

आखिरकार वह सोलह नम्बर के रूम में पहुँच ही गई। हाथों में झाड़ू-पोंछा पकड़कर सपना गेट खोल कमरे के अन्दर गई। कमरा तो उसके घर से भी बड़ा था। उस कमरे में पूरे पन्द्रह-सोलह बेड लगे थे और हरेक बेड पर एक मरीज़ लेटा था। बेड के बगल में ऑक्सीजन सिलेंडर भी रखा हुआ था। मरीज़ के चेहरे पर ऑक्सीजन का मास्क लगा था। मरीज़ों में कोई चुपचाप लेटा था तो किसी की नज़र ऑक्सीजन डिस्प्ले से हट ही नहीं रही थी। सपना मन ही मन सोचने लगी कि ऐसा माहौल तो जब से कोरोना शुरू हुआ है तब से सिर्फ टी.वी., रेडियो और अखबारों में सुनते और देखते आ रहे थे। अब कोरोना मरीज़ों को अपने सामने कुछ मीटर की दूरी पर बेड पर लेटे देख उसे डर-सा लगने लगा। उसने पूरी किट पहन रखी थी, तब भी। लोग तो कह रहे हैं कि कोरोना हवा से भी फैल रहा है। सच में कोरोना से बचे रहना कितना मुश्किल है।

उसे ऐसा लग रहा था कि पूरा अस्पताल ही कोरोना मरीज़ों से भरा पड़ा है। उसने सोचा यहाँ पर तो आसपास की सभी जगहों पर कोरोनावायरस ज़रूर ही होगा। और जो मरीज़ ठीक सामने लेटे हैं, वे तो कोरोना से लिपटे हुए होंगे ही। उनके पास वह गई और छोटी-सी भूल हुई नहीं कि कोरोना उससे चिपक जाएगा। मरीज़ों के बगल में रखे टेबल पर खाने के कुछ डिब्बे, पानी की बोतल और कुछ ज़रूरी सामान पहले से ही मौजूद था। हर मरीज़ के बगल में बड़ी-बड़ी मशीनों के साथ एक छोटा टेबल फैन और व्हीलचेयर भी थी। कुछ बेड पर औरतें थीं, तो कुछ पर मर्द।

धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए सपना और अन्दर गई। उसकी भी नज़र मरीज़ के ऊपर दीवार पर लगे स्क्रीन डिस्प्ले पर ही गई। सपना यही देख रही थी कि किसकी साँसें चल रही है, किसकी नहीं। फिर वह अपना काम करने लगी। पहली बार किट पहनकर सफाई करते हुए उसकी साँसें फूलने लगी थीं। तब वह किट को हल्का-सा ऊपर-नीचे कर साँस लेती। उसे इसका डर लगा रहता कि कहीं साँस लेते वक्त वायरस की शिकार ना हो जाए। पूरे कमरे में झाड़ू-पोंछा कर वह कुछ देर के लिए नीचे हॉल में चली गई। तब भी उसने किट पहनी हुई थी।

मरीज़ों में कोई चुपचाप लेटा था तो किसी की नज़र ऑक्सीजन डिस्प्ले से हट ही नहीं रही थी। सपना मन ही मन सोचने लगी कि ऐसा माहौल तो जब से कोरोना शुरू हुआ है तब से सिर्फ टी.वी., रेडियो और अखबारों में सुनते और देखते आ रहे थे। अब कोरोना मरीज़ों को अपने सामने कुछ मीटर की दूरी पर बेड पर लेटे देख उसे डर-सा लगने लगा।

तालाबन्दी में बचपन

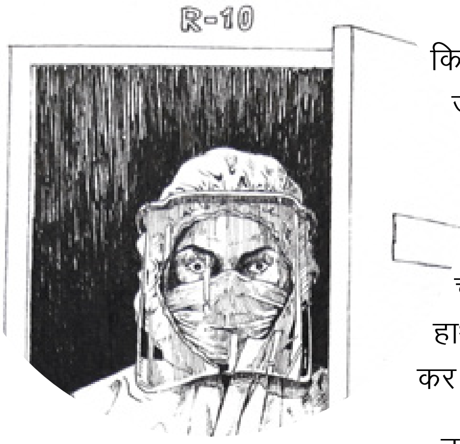

किट तभी उतारना होता है जब घर जाना हो। पोंछा लगा-लगाकर जब उसके हाथ-पैर दुखने लगे तब उसने बैग से फोन निकालकर समय देखा तो तीन से ऊपर हो चुके थे। किट को कूड़ेदान में डाल, हाथ-मुँह धो, अपने को सैनिटाइज़ कर वह घर लौट गई।

दूसरे दिन जब वह अस्पताल पहुँची तो देखा कि कोरोना के मरीज़ एक के बाद एक आते जा रहे हैं। काफी संख्या में मरीज़ थे। यह देख सपना को समझ में नहीं आ रहा था कि उसे कौन-से कमरे में जाना है। वह सीधे ठेकेदार के पास चली गई और नम्बर पूछा तो उसके पास ही खड़े एक व्यक्ति ने सपना के हाथ में एक लिस्ट पकड़ा दी। सपना इतनी पढ़ी-लिखी तो थी नहीं कि उसे समझ में आ जाए कि उसमें क्या लिखा है। उसने ठेकेदार से फिर पूछा तो उसने कहा, “तुम्हें कोरोना वाले वार्ड में जाना है।” सपना मन ही मन सोचने लगी वॉर्ड क्या होता है, कौन-से वॉर्ड में जाना है। उसे कुछ समझ नहीं आया। ठेकेदार ने तेज़ आवाज़ के साथ कहा कि तुम्हें कोरोना वाले वॉर्ड में जाना है। इस अस्पताल में अलग-अलग वॉर्ड बने हुए हैं — कोरोना के अलग, इमरजेंसी के अलग, आईसीयू के अलग। इनमें से तुम्हें कोरोना वाले वॉर्ड में जाना है जो रूम नम्बर दस है। तब जाकर उसे समझ में आया कि उसे जाना कहाँ है।

फिर वह किट पहन धीमे कदमों से रूम नम्बर दस की तरफ गई। जब वह ग्राउंड फ्लोर से आगे बढ़ रही थी तो उसे ज़मीन पर पन्नियाँ और मुड़े-तुड़े पेपर पड़े मिले। ना जाने अभी तक किसी ने यहाँ सफाई क्यूँ नहीं की। वह कुछ सोचते हुए कमरे की ओर गई। वहाँ पर भी उसे एकाध चप्पलें वैसे ही बिखरी मिलीं। एक इधर पड़ी हुई थी, तो दूसरी उधर। सपना सोचने लगी जब काम करके बाहर जाऊँगी तब सब ठीक करके रख दूँगी। गेट का दरवाज़ा खोल वह अन्दर चली गई। जगह-जगह खाना बिखरा पड़ा था। कहीं चावल तो कहीं रोटी। अस्पताल में मरीज़ों का खाना अलग से आता है, बाकी स्टाफ का और डॉक्टरों का खाना अच्छे होटलों से आता है। अस्पताल के बाहर खाने वाली गाड़ी आ चुकी थी। खाना हर कमरे में जा रहा था। जिस कमरे में सपना सफाई कर रही थी, वहाँ दो-तीन लेडीज़ हाथ में खाने की बड़ी पन्नी लिए आईं और मरीज़ों के बगल में रखी टेबल पर खाना रख गईं।

घण्टे भर में सपना ने सारी साफ-सफाई कर ली थी। कभी मरीज़ों के बेड के नीचे कूड़ा निकालकर झाड़ू मारी तो कभी टेबलों को हटा-हटाकर पोंछा लगाया। उसने मरीज़ों की तरफ देखा। मरीज़ों को खाने तक का होश नहीं था। इक्का-दुक्का मरीज़ ही देखने में मोटे-तगड़े और भरे हुए चेहरे वाले मिले। उसके मन में आया कि अच्छे-अच्छे घर से आए लोगों को भी कोरोना हो जाता है। सपना सोचने लगी कि यहाँ आने से पहले शायद ये लोग भी बाहर कमाने जाते होंगे। कुछ मरीज़ तो शायद ऐसे भी होंगे जो अपने घर को

घण्टे भर में सपना ने सारी साफ-सफाई कर ली थी। कभी मरीज़ों के बेड के नीचे कूड़ा निकालकर झाड़ू मारी तो कभी टेबलों को हटा-हटाकर पोंछा लगाया। उसने मरीज़ों की तरफ देखा। मरीज़ों को खाने तक का होश नहीं था। इक्का-दुक्का मरीज़ ही देखने में मोटे-तगड़े और भरे हुए चेहरे वाले मिले। उसके मन में आया कि अच्छे-अच्छे घर से आए लोगों को भी कोरोना हो जाता है।

चलाने वाले एकमात्र व्यक्ति होंगे। ना जाने अब उनके परिवार वाले घर कैसे चला रहे होंगे। यहाँ तो ये ऐसे लेटे हैं कि एक उँगली भी नहीं हिला पा रहे हैं। खाना वैसे का वैसा ही रखा हुआ है। कुछ खा पाते हैं, तो कुछ की तो बिना खाए ही डेथ हो जाती है। खयालों से बाहर आकर उसने कमरे की पूरी सफाई कर डाली। फिर वह कमरे से बाहर निकल गई।

बीतते दिनों के साथ वह अपने काम की आदी हो चुकी थी। रोज़ाना जल्दी उठना, खाना बनाना और अस्पताल जाना उसके रूटीन में शामिल हो रहा था।

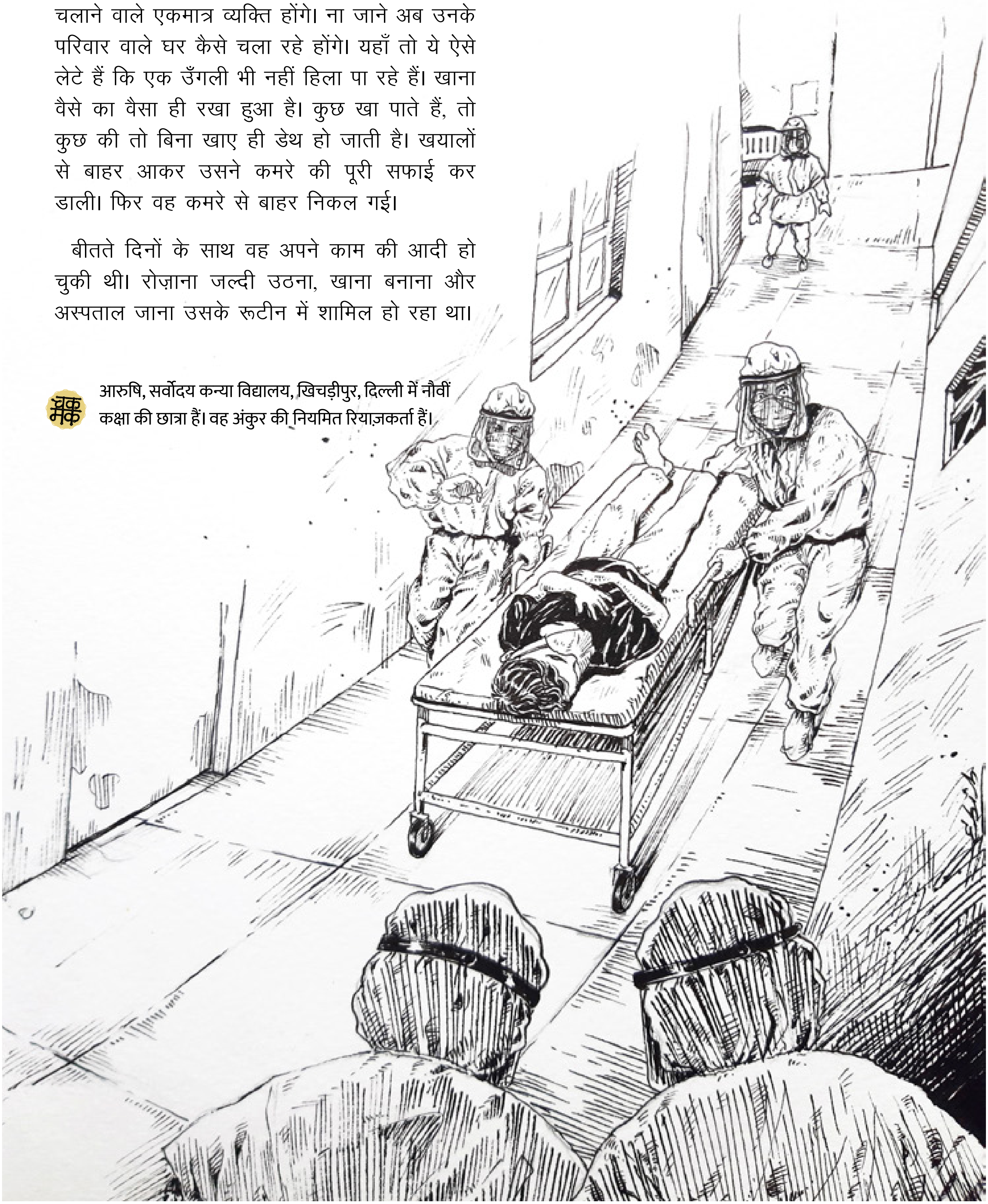

आरुषि, सर्वोदय कन्या विद्यालय, खिचड़ीपुर, दिल्ली में नौवीं कक्षा की छात्रा हैं। वह अंकुर की नियमित रियाज़कर्ता हैं।

माथापच्ची

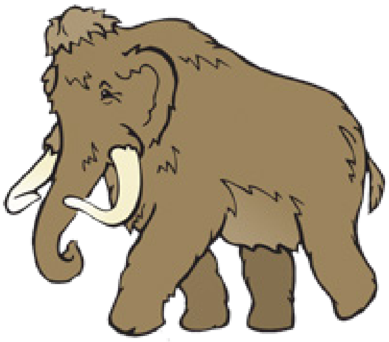

1.

हाथी के बहुत नज़दीकी रिश्तेदार हैं, मैमथ। मैमथ करीब चार हज़ार साल पहले इस दुनिया से विलुप्त हो गए। क्या तुम इस मैमथ की सही परछाईं पहचान सकते हो?

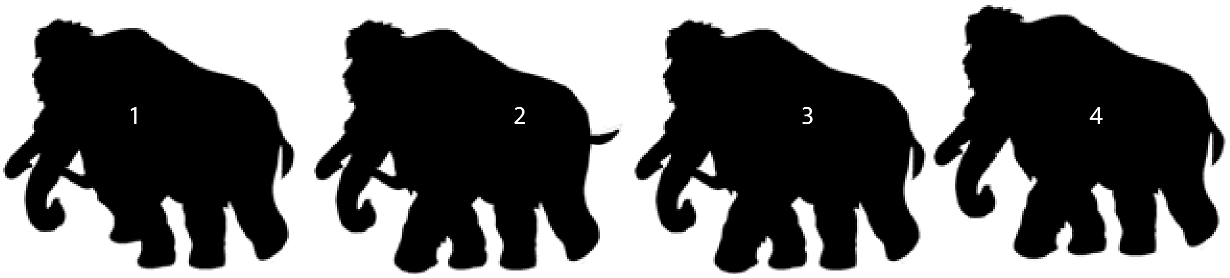

2.

तुम्हारे पास दूध की 21 बोतलें हैं– 7 पूरी भरी हुईं, 7 खाली और 7 आधी भरी हुईं। यह बोतलें 3 लोगों में किस तरह बाँटी जाएँ कि तीनों को बराबर मात्रा में दूध मिले?

3.

गीता उत्तर की ओर 6 किलोमीटर चलती है और फिर वह बाएँ मुड़कर 8 किलोमीटर चलती है। और फिर बाएँ मुड़कर 6 किलोमीटर और चलती है। अब बताओ कि गीता प्रारम्भिक स्थान से कितनी दूर है?

4.

दी गई ग्रिड में कुछ कीड़े-मकोड़ों के नाम छुपे हुए हैं। देखो, तुम कितने ढूँढ़ पाते हो...

गु	पी	टी	दी	ति	ल	चि	ट्टा	कें
कॉ	ब	वो	म	खा	सी	ह	छ	चु
क	चीं	रैं	क	छि	प	तं	गा	आ
रो	टीं	न	ला	सो	प	लो	ति	का
च	त	तैं	या	हू	ले	क	त	ख
ख	झीं	गु	र	पि	स्सू	अ	ली	ट
खा	ट	क	न	ख	जू	रा	का	म
घों	हो	म	क	ड़ी	ब	टि	न	ल
घा	ची	ते	ल	चा	को	घ	ड्डा	हा

पेज 38 पर जारी...

कल शाम जेल में हुई सबसे अनोखी घटना

देवांगना कलिता
अनुवादः कविता तिवारी

कल शाम जेल में सबसे अनोखी घटना हुई। अपनी पिछली चिट्ठी में मैंने लिखा था कि कैसे मैं और बच्चे मिलकर इन्द्रधनुष और जुगनुओं के बारे में सोचते रहते हैं।

दो साल से कम उम्र के तीन बच्चे (जो हमारी भाषा नहीं बोलते हैं), थोड़ा-थोड़ा बोलने वाला दो साल का एक बच्चा और बहुत बोलने वाली चार साल की लड़कियों को मैंने ये समझाने की कोशिश की कि इन्द्रधनुष कैसा दिखता है। उसमें कौन-कौन से रंग होते हैं। हमारे पास सिर्फ लाल रंग के क्रेयान का एक टूटा हुआ टुकड़ा था। इसलिए हमने बाकी के रंग पुराने अखबारों से ढूँढ़े और उनको फाड़कर अपना इन्द्रधनुषी कोलाज बनाया। बच्चे बहुत ही खुश और उत्सुक थे। लेकिन थोड़ी उलझन में भी थे, "पर आसमान में इतने सारे रंग कैसे हो सकते हैं?" सबसे बड़ी बच्ची पूछती रही।

और फिर अचानक, ना जाने कहाँ से कल शाम ऐसा हुआ। यह शाम का वो वक्त था जब सूरज डूबने से पहले झिलमिलाते कण हमारी नज़रों के सामने नाचने लगते हैं। याद है एक शाम हमने उन्हें खोजा था। आसमान असाधारण रूप से नीला और साफ था। शाम की रोशनी मद्धिम और उदासी भरी थी। सूरज बादलों के पीछे से झाँक रहा था। और बहुत हल्की-सी बूँदाबाँदी हो रही थी। एक पल के लिए उम्मीद जगी, लेकिन उम्मीद करने से डर लगता है।

सबसे बड़ी बच्ची चिल्लाई, "आंटी, देखो इन्द्रधनुष।" हाँ, वो हमें आंटी बुलाते हैं। मेरे खयाल से अब हम आंटी हो भी गए हैं। मैं उनमें से अधिकांश बच्चों की

चित्रः जेल के फूल

माँओं से कम से कम पाँच साल बड़ी हूँ। हर कोई मुझे कहता रहता है कि मेरे बाल बहुत सफेद हो गए हैं। और मुझे उन्हें कलर करना चाहिए। लेकिन इससे पहले मुझे उन्हें कंघी करना चाहिए। महिला जेल में बालों को संवारना, करीने से चोटी बनाना और उन्हें कलर करना काफी सामूहिक गतिविधि है।

तो, हाँ आकाश में सचमुच का इन्द्रधनुष था। हमारे वार्ड के सामने खुद को प्रदर्शित करता इन्द्रधनुष का एक शानदार टुकड़ा था। बच्चे उसे देखकर उत्साह से भर गए थे। उनमें से हर कोई चाहता था कि उसे ऊपर उठाया जाए ताकि वो इन्द्रधनुष को अच्छे-से देख सके। चारों ओर उत्साह फैला हुआ था। महिलाएँ बाहर आने और इस नज़ारे को देखने के लिए एक-दूसरे को ज़ोर-ज़ोर से बुलाने लगीं।

जब बादल छँट गए, आसमान और भी ज़्यादा नीला व साफ हो गया तो अचानक से एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक पूरा इन्द्रधनुष दिखाई देने लगा। सबसे छोटा बच्चा (जो एक ब्राज़ीली लड़का है) चिल्लाया, “हालेलूयाह”। सभी लोग हैरान रह गए। यह उसके द्वारा बोला गया पहला शब्द था। ज़रूर उसने इसे कुछ महीनों पहले हर शाम अफ्रीकी कैदियों द्वारा ईसा मसीह से ज़ोर-ज़ोर से की जाने वाली प्रार्थनाओं से सीखा होगा।

इन्द्रधुनष, और वो भी पूरे इन्द्रधनुष को देखने की खुशी ने पूरे माहौल को भाव-विभोर कर दिया था। कुछ उत्साह से प्रार्थना करने लगे, तो कुछ अपने हाथों और सिर को आसमान की ओर किए हुए काँपने लगे। कुछ रोने लगे और कुछ खड़े होकर इन्द्रधनुष को घूरने लगे और मुस्कराने लगे तो कुछ ज़ोर-ज़ोर से दुआ करने लगे। कुछ ईश्वर को पुकारने लगे तो कुछ उसे कोसने लगे। कुछ सातों रंगों को खोजने व गिनने के लिए अपनी पलकें झपकाते रहे। वह यह पक्का कर लेना चाहते थे कि उसमें सभी सात रंग हैं ना, कि वह सच में उसे देख रहे हैं ना। कुछ लोग दूसरों का हाथ पकड़कर अपने मन की इच्छा ज़ाहिर करने लगे। मुझे नदी के किनारे सर्दियों की एक ऐसी ही शाम को इन्द्रधनुष के पार जाते चिड़ियों के झुण्ड के छायाचित्रों की याद हो आई।

कई कैदियों ने पहली बार इन्द्रधनुष देखा था। “कभी सोचा नहीं था कि जेल में आकर पहली बार देखूँगी।” पक्के तौर पर सभी बच्चों के लिए भी इन्द्रधुनष को देखने का यह पहला मौका था। जैसा कि एक दोस्त ने उन्हें कहा, “यह हमारी आज़ादी का टिकट है, हमारा रास्ता है। हमें ज़रूर पता करना चाहिए कि इसका अन्त कहाँ से शुरू होता है।”

लोगों के मन में उम्मीद थी। बहुत सारी उम्मीद, दर्द भरी असम्भव-सी उम्मीद। खुशी के उस पल में सब कुछ ठहरा हुआ-सा लग रहा था। मुझे कभी ना खतम होने वाली एक उदासी, एक तरह की हार और इन उम्मीदों को पूरा करने में इन्द्रधनुष की असमर्थता महसूस हो रही थी। यह एक ऐसा धोखा है जिसे टाला नहीं जा सकता। और यह सिर्फ कुछ ही पलों के लिए था।

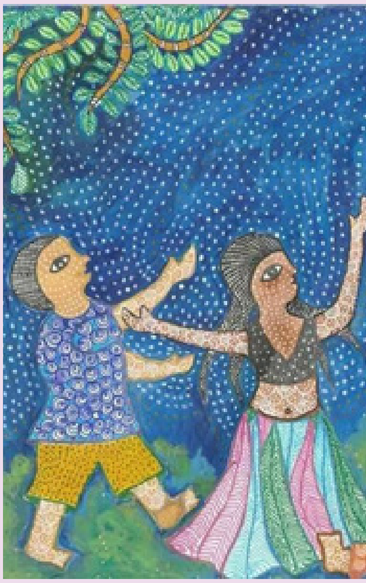

जैसा कि लगभग सभी जानते थे जल्दी ही अन्दर बन्द होने का समय होने वाला था। इन्द्रधनुष धुँधला हो गया था। बच्चे परेशान हो गए। “आंटी, वो कहाँ गया?” “वो क्यों चला गया?” “कल आएगा क्या?” “वो हमेशा क्यों नही रहता?” ऐसे ढेरों सवाल थे जिनका मैं बमुश्किल कोई सन्तोषजनक जवाब दे पाती। मेरे पास तो इस बुनियादी सवाल का जवाब भी नहीं था कि वो क्यों आता है, वो क्यों और कैसे बनता है और फिर गायब हो जाता है। तुम्हें याद है क्या?

आज शाम को सभी बच्चे बाहर पार्क में अपने छोटे-से ‘मैरी गो राउंड’ झूले पर बैठे उम्मीद भरी नज़रों से आसमान को ताक रहे थे। “वो आज आएगा क्या?” मुझे उस होशियार लड़के की याद आई जो हमें सर्दियों में अपने पड़ोस में मिला था। और मैं सोचने लगी कि क्या वो आखिरकार पुराने शहर के आसमान में इन्द्रधनुष को देख पाया होगा।

2020 पुराने शहर के प्रदूषण से भरे आकाश में इन्द्रधनुषों को देखने का साल था। यहाँ तक कि हम जेल में भी एक इन्द्रधनुष देख पाए। अब हमें जुगनू को देखने का इन्तज़ार है।

चित्र: जेल के कुछ और फूल। साथ में जेल के अन्दर अपना रास्ता खोजती अखबार की एक कटिंग: ‘फिलिस्तीनी जेरिको और इज़राइल के ईन गेदी के बीच आकाश में उगती मिल्की-वे आकाशगंगा’

देवांगना कलिता ने यह लेख 2020 में जेल से अपने कुछ साथियों को लिखा था।

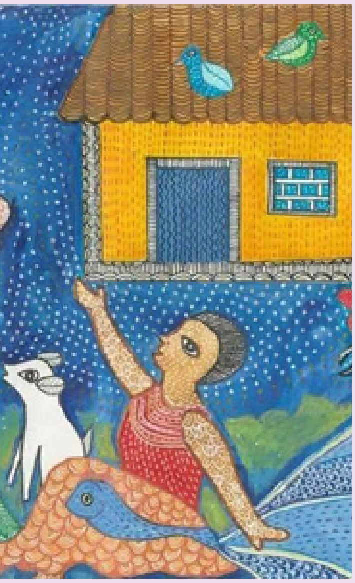

चित्र: देवांगना द्वारा बेगम रोक्या की कहानी 'सुल्तानाज़ ड्रीम' के लिए बनाया गया यह चित्र दुर्गाबाई व्योम और सुभाष व्योम की गोंड चित्रकला शैली पर आधारित है।

nature conservation foundation
science for conservation

टर्र टर्र

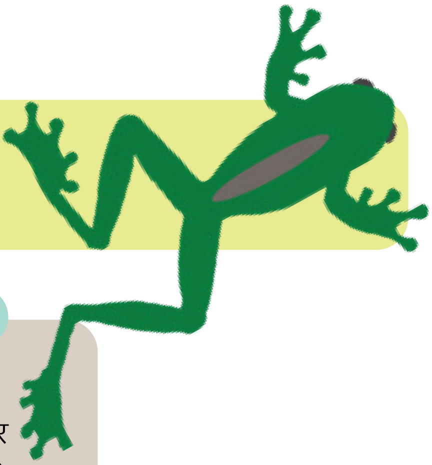

कॉमन इन्डियन टोड

टोड और मेंढक

भारत में सैकड़ों किस्म के टोड और मेंढक पाए जाते हैं। पेड़ों पर रहने वाले मेंढक, झाड़ियों पर रहने वाले मेंढक, डाँसिंग फ्रॉग, पानी में रहने वाले मेंढक और टोड। तुमने अभी तक जो भी पढ़ा होगा उसके हिसाब से टोड और मेंढकों में बहुत ही कम अन्तर है, इसलिए हम इन सभी को मेंढक ही मानेंगे।

कॉमन इन्डियन ट्री फ्रॉग

इन्डियन बलून फ्रॉग

दाना-पानी

मेंढकों को पानी चाहिए होता है

बहुत-से वयस्क मेंढक ज़मीन पर रह सकते हैं। कुछ मेंढक अपने अण्डे भी ज़मीन पर देते हैं। लेकिन अण्डों से निकले सभी टैडपोल्स को ज़िन्दा रहने के लिए पानी की ज़रूरत पड़ती है। विभिन्न प्रकार के टैडपोल तालाब, पोखर, नदी या झील के किनारे और पेड़ के तने में जमे हुए पानी और पत्तियों के गुच्छों में रुके हुए पानी का इस्तेमाल करते हैं।

ब्लू आइड फ्रॉग

पर्पल फ्रॉग

मेंढकों के अण्डे : अण्डों का ढेर

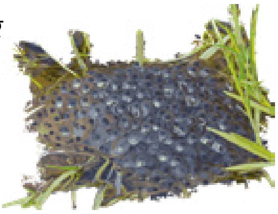

अण्डों की माला

फील्ड डायरी के लिए

बाहर निकलो और मेंढक की तलाश शुरू करो। अगर तुम्हारी किस्मत अच्छी रही तो तुम्हें बाथरूम या दरवाज़े के पास या अपने बगीचे के गीले कोनों में मेंढक मिल सकता है। उसका आकार, रंग, पैटर्न और उसकी त्वचा का खुरदरापन अपनी डायरी में नोट कर लो। साथ ही उसकी आवाज़ के बार में भी लिख लो।

यहाँ कुछ तरीके सुझाए गए हैं जिनसे तुम्हें मेढक ढूँढ़ने में मदद मिल सकती है:

- इन्हें तब ढूँढ़ो जब धूप ना हो, मौसम शुष्क हो या फिर बारिश के तुरन्त बाद।
- गीली और नमी वाली जगहों पर देखो।
- वहाँ देखो जहाँ पर पानी ज़मीन के अन्दर जाता हो।
- पोखरों और तालाबों के किनारों पर देखो।
- पानी में हुई छपछप की आवाज़ सुनो। एक छोटे जीव की तलाश करो जो अभी-अभी उचककर तुमसे दूर भागा हो।
- अगर तुम्हें मेंढक की आवाज़ आ रही है तो उसका पीछा करो।

chakmak@eklavya.in पर हमें लिखो और मेंढकों की अपनी खोज के बारे में बताओ।

जीभ से शिकार

मेंढक मांसाहारी जीव होते हैं। मेंढक वे सब खा जाते हैं जो उनके मुँह में समा जाए– मच्छर, मक्खियाँ, टिड्डे, छिपकली, चूहे और तो और छोटे मेंढक भी। वे शिकार के लिए अपनी जीभ का इस्तेमाल करते हैं। अपने शिकार को लपकने के लिए वे अपनी जीभ को काफी दूर तक ले जा सकते हैं। मेंढक अपने जबड़ों और हाथ-पैरों के बिना शिकार कैसे करते होंगे? दरअसल होता यूँ है कि मेंढक अपनी जीभ से शिकार पर हमला करता है। जीभ शिकार पर चोट करती है। शिकार जीभ पर चिपक जाता है और जीभ वापिस मेंढक के मुँह में आ जाती है। और ये सब पलक झपकते ही हो जाता है।

प्रतियोगिता

आम तौर पर नर मेंढक, मादाओं को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए टर्राते हैं। ऐसा करते हुए वे बहुत शोर भी मचा सकते हैं। भारत के पश्चिमी घाटों के जंगलों की नदियों के किनारे कुछ ऐसे मेंढक पाए जाते हैं जो मादाओं को आकर्षित करने के लिए अपने हाथ-पाँव हिलाकर डाँस करते हैं। उन्हें ऐसा इसलिए करना पड़ता है क्योंकि बहते पानी की तेज़ आवाज़ों के कारण मादाओं तक नरों की आवाज़ें नहीं पहुँच पातीं। एक डाँस करते हुए मेंढक का चित्र बनाकर हमें chakmak@eklavya.in पर भेजो और इनाम में एक किताब पाओ।

टैडपोल्स का जीवन चक्र

अनुवाद: मुदित श्रीवास्तव

जिन्न ऐसे होते हैं?

मोहम्मद अरशद खान
चित्र: हबीब अली

जब सुहेल की अम्मी उसे डाँट रही थीं, तभी मैंने तय कर लिया था कि उन खण्डहरों की तरफ ज़रूर जाऊँगा। मैंने सुहेल को अपना इरादा बताया तो अम्मी की डाँट के बावजूद वह राज़ी हो गया।

हमारे कस्बे में एक पुराना खण्डहर था। उसके ज़्यादातर कमरों की छतें ढह चुकी थीं। बस कुछेक दीवारें और खम्भे खड़े थे, जिन पर घास उग आई थी। लोग कहते थे कि उस सुनसान

"जिन्न अक्सर सुनसान जगहों में रहते हैं। कुछ तो खुले पानी या समुन्दर में भी रहते हैं। कुछ खतरनाक किस्म के जिन्न कब्रिस्तान में भी पाए जाते हैं, जो इन्सानों का गोश्त खाते हैं। अगर कोई ज़िन्दा आदमी रात-बिरात इनके बीच फँस जाए तो उसका खून पी जाते हैं। और तो और कुछ जिन्न तो इन्सानी शक्ल में रहते हैं। कोई भूल से भी उनके हाथ पड़ जाए तो उसे कैद करके भेड़ बना देते हैं।"

में जिन्न रहते हैं। खण्डहर के थोड़ा आगे एक निस्वाँ (यानी लड़कियों का) स्कूल था। स्कूल के पीछे बड़ा-सा तालाब और तालाब से कुछ दूर ऊँचाई पर रेल की पटरियाँ बिछी हुई थीं। ज़ाहिर है, उस तरफ लोगों का आना-जाना कम था। कस्बे की आबादी भी वहीं से खतम हो जाती थी। बस, आसपास कुम्हारों के कुछ छप्पर पड़े कच्चे-पक्के मकान बने थे।

सुबह होते ही स्कूल की लड़कियाँ हरा कुर्ता और सफेद सलवार पहने, सिर पर दुपट्टा कसे स्कूल जाती दिखती थीं। अगर किसी लड़की के सिर से दुपट्टा सरक जाता या बाल दिख जाते तो मौलवी साहब बड़ी डाँट लगाते। एक बार अम्मी को कहते सुना था कि अगर किसी जिन्न की नज़र खुशबू लगाए और खुले बालों वाली लड़की पर पड़ जाए तो वह उसका आशिक हो जाता है। हालाँकि मेरे बड़े भाई के एक दोस्त कहते थे कि खण्डहर में जिन्न वगैरह कुछ नहीं हैं। लोग लड़कियों के स्कूल की तरफ न जाएँ, इसलिए यह अफवाह उड़ाई गई है।

बहरहाल, जो भी हो, हमने तय कर लिया कि खण्डहरों में जाकर पता ज़रूर लगाएँगे कि जिन्न कैसे होते हैं। पर घरवालों की निगाह बचाकर निकल पाना मुश्किल था। इसलिए हमने तय किया कि लू भरी दोपहरी में जब घरवाले कमरों में बन्द होकर सो जाते हैं, तब चलेंगे।

हम निकलने की तैयारी में थे कि सईद आ गया। वह महल्ले की मस्जिद के इमाम साहब का बेटा था। वह हमेशा महँगे और कलफ किए कपड़े पहने रहता था। उसका घर भी बड़ा शानदार और दो मंज़िला था। हालाँकि इमाम साहब पाँचों वक्त की नमाज़ पढ़ाने और गण्डा-ताबीज देने के अलावा कोई काम नहीं करते थे।

हम लोग सईद से बचना चाहते थे। पर वह ऐसा चिपका कि छोड़ने का नाम ही न ले। हम कुछ भी बहाना करते तो कहता, “ठीक है। मैं भी ऐसा करूँगा।” सईद को साथ ले जाने में खतरा था। वह डरपोक किस्म का लड़का था। वह जाकर घरवालों पर हमारा राज़ फाश कर सकता था।

आखिरकार जब सईद नहीं टला तो हमने उसे सारी बात बता दी। सईद माथे पर बल डालता हुआ बोला, “अरे! तुम लोग नहीं जानते। जिन्न अलग मखलूक (दुनिया) होते हैं। जैसे हम इन्सानों में कुछ सीधे और कुछ शरारती होते हैं, उसी तरह जिन्नों में भी होते हैं। अगर किसी के पीछे एक बार पड़ जाएँ तो उसका काम तमाम समझो।”

सईद ने बताया तो डराने के अन्दाज़ में था। पर उसकी बातें हमें डरा नहीं पाईं। पर बात चूँकि खुल चुकी थी, इसलिए सईद को ले जाना ज़रूरी था। इसलिए बेमन से ही सही, हमने उसे सुनना ज़रूरी समझा। हमें दिलचस्पी लेता देख वह आँखें बड़ी-बड़ी करके बताता रहा, "जिन्न अक्सर सुनसान जगहों में रहते हैं। कुछ तो खुले पानी या समुन्दर में भी रहते हैं। कुछ खतरनाक किस्म के जिन्न कब्रिस्तान में भी पाए जाते हैं, जो इन्सानों का गोश्त खाते हैं। अगर कोई ज़िन्दा आदमी रात-बिरात इनके बीच फँस जाए तो उसका खून पी जाते हैं। और तो और कुछ जिन्न तो इन्सानी शक्ल में रहते हैं। कोई भूल से भी उनके हाथ पड़ जाए तो उसे कैद करके भेड़ बना देते हैं।"

जिन्नों के प्रकार जानने में हमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। हम दोनों उबासी लेने लगे। हमारी दिलचस्पी कम होते देख सईद ने ज़ोर देकर कहा, "मेरी बात तुम लोगों को मज़ाक लग रही है। अरे! जिन्नों का ज़िक्र तो कुराने-पाक में भी आया है कि ये बिना धुएँवाली आग के बने होते हैं।"

"पर मैंने सुना है कि जिन्न कुराने-पाक की तिलावत (पढ़ने) से बहुत डरते हैं," सुहेल ने कहा।

"बेशक..! जिन्न तो क्या, बड़े से बड़ा शैतान भी।"

सुहेल ने तुरुप का पत्ता फेंका, "देखो सईद, हम दोनों तो 'अलिफ' के आगे 'बे' नहीं जानते हैं, पर तुम्हें तो खूब सूरतें और आयतें याद हैं। तुम ज़ोर-ज़ोर से पढ़ते रहना। किसी शैतानी ताकत में कहाँ दम, जो सामने आ जाए।"

मैं सुहेल के दिमाग को मान गया। क्या पासा फेंका था। उसकी बात से सईद के अन्दर भी हिम्मत पैदा हो गई और वह तैयार हो गया।

हम तीनों चल पड़े। लू की साँय-साँय हो रही थी। सड़कों पर सन्नाटा था। इक्का-दुक्का लोग ही इधर-उधर आते-जाते दिखते थे। जब हम खण्डहरों की ओर बढ़े तो बिलकुल सन्नाटा हो गया। हम दोनों तो खण्डहर के पास पहुँच गए। पर सईद दूर खड़ा रहा। वह ज़ोर-ज़ोर से आयत-अल-कुर्सी पढ़ रहा था। मैं और सुहेल ईंट-पत्थर उठा-उठाकर खण्डहर की ओर फेंकने लगे। चिल्ला भी रहे थे,

"निकल बाहर, जिन्न के बच्चे...!"

"तेरी ऐसी की तैसी...!"

सईद के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। उसने अब चारों कुल पढ़ने शुरू कर दिए थे।

थोड़ी देर हम लोग पत्थरबाज़ी करते रहे। फिर एकाएक लगा अन्दर जैसे कुछ हलचल हो रही है। हम दोनों तो अद्धी-ईंटें तानकर खड़े हो गए कि कोई जिन्न-विन्न निकला तो मारकर खोपड़ी तोड़ देंगे। पर सईद डर के मारे वहाँ से भाग निकला।

थोड़ी देर बाद अन्दर से चार खानोंवाली लुंगी और मटमैली-सी बनियान पहने, मुँह में बीड़ी दबाए एक आदमी निकला। पीछे के अँधेरे में दो चेहरे और उभरे। वे भी उसी की तरह मैले-कुचैले थे। आगेवाला आदमी ज़ोर-से चिल्लाया, "ओ रे, लड़कों, शोर क्यों मचा रहे हो? भागो यहाँ से, वरना बहुत पिटाई करूँगा।"

हम दो थे और वे तीन। शायद अन्दर और भी रहे हों। इसलिए हमने भागने में ही भलाई समझी।

हम जब भागकर गली के मोड़ पर पहुँचे तो सईद डर से सफेद चेहरा लिए खड़ा था। उसने थरथराते हुए पूछा, "क्या कोई जिन्न दिखा?"

"हाँ...," सुहेल बहुत अनमने ढंग से बोला। "मैं तो समझता था कि जिन्न सफेद कपड़े पहनते होंगे। चेहरे पर बड़ी-सी सफेद दाढ़ी होगी। पर मुझे क्या पता जिन्न इतने गन्दे होते हैं कि बीड़ी पीते हैं... और ताश भी खेलते हैं।"

“मेरी बात तुम लोगों को मज़ाक लग रही है। अरे! जिन्नों का ज़िक्र तो कुराने-पाक में भी आया है कि ये बिना धुएँवाली आग के बने होते हैं।”

भाग-2

चन्दा, शतरंज और चावल के दाने

आलोका कन्हरे

पिछले अंक में तुमने 'चन्दा, शतरंज और चावल के दाने' कहानी पढ़ी होगी। यदि नहीं पढ़ पाए हो तो मैं संक्षेप में बता देती हूँ।

चन्दा ने राजा से चावल के दानों की माँग की थी। उसने एक आसान-सी माँग रखी थी।

वह चाहती थी कि पहले चौकोर के लिए चावल के 2 दाने दिए जाएँ, दूसरे चौकोर के लिए 4 दाने, तीसरे चौकोर के लिए 8 दाने और इसी तरह आगे भी। इसका मतलब हुआ कि अगले चौकोर के लिए चावल के दाने पिछले चौकोर के दानों से दुगुने होंगे।

आओ, दानों की संख्या को फिर से देखते हैं।

चौकोर संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
चावल के दानों की संख्या	2	4	8	16	32	64	128	256	512	1024	2048

12	13	14	15	16	17	18	19	20
4096	8192	16384	32768	65536	131072	262144	524288	1048576

बीस नम्बर के चौकोर तक चन्दा के पास चावल के दस लाख से ज़्यादा दाने होंगे। क्या तुम अनुमान लगा सकते हो कि यह कितने किलोग्राम चावल होगा?

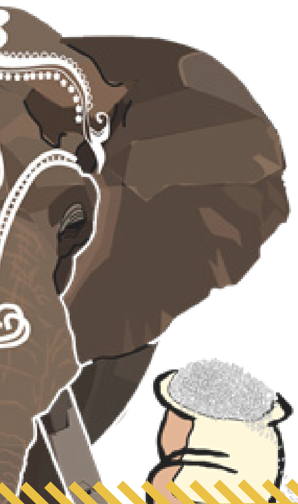

तुम पचास ग्राम चावल में दानों की संख्या गिन सकते हो। और इस संख्या को 20 से गुणा करके 1 किलोग्राम चावल में दानों की संख्या पता कर सकते हो। (सोचो कि हमने 20 से ही गुणा क्यों किया?)

मान लो कि चावल के प्रत्येक किलोग्राम में औसतन पचास हज़ार दाने होते हैं। इस हिसाब से चावल के दस लाख दाने लगभग 20 किलोग्राम के बराबर होंगे। यानी कि बीसवें चौकोर के लिए 20 किलोग्राम चावल देना होगा। और फिर इक्कीसवें चौकोर के लिए 40 किलोग्राम। बाइसवें चौकोर के लिए 80 किलोग्राम। तो तेईसवें चौकोर तक चन्दा के पास डेढ़ क्विंटल से भी ज़्यादा चावल होगा। क्या तुम अनुमान लगा सकते हो कि चौसठवें चौकोर के लिए कितना ज़्यादा चावल होगा?

क्या तुम चन्दा की संख्याओं (2, 4, 8, 16,...) और संख्याओं 4, 12, 36, 108 में कोई समानता देख सकते हो?

गणित है मज़ेदार!

इन पन्नों में हम कोशिश करेंगे कि आपको ऐसी चीज़ें दें जिनको हल करने में मज़ा आए। ये पन्ने खास उन लोगों के लिए हैं जिन्हें गणित से डर लगता है।

ध्यान से देखो, संख्याओं के इन समूहों में अगली संख्या पहले वाली संख्या को किसी खास संख्या से गुणा करने पर मिली है।

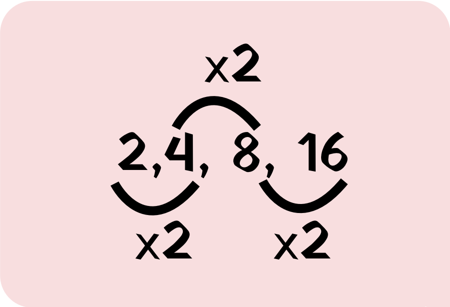

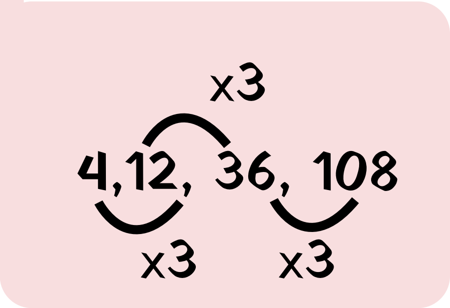

संख्याओं के इन समूहों/पैटर्नों का एक विशेष नाम है। इन्हें गुणोत्तर श्रेणी (Geometric Progression, संक्षेप में GP) कहते हैं। कोशिका विभाजन या अर्द्धसूत्री विभाजन में प्रत्येक स्तर पर कोशिकाएँ जनक कोशिकाओं की संख्या की दुगुनी होती हैं। नीचे दिया गया चित्र देखो।

अफवाहों के फैलने का एक मॉडल भी कुछ ऐसी ही बात सुझाता है। इस मॉडल के अनुसार अफवाहों का फैलना भी हर स्तर पर इसी पैटर्न का पालन करता है।

अर्द्धसूत्री विभाजन

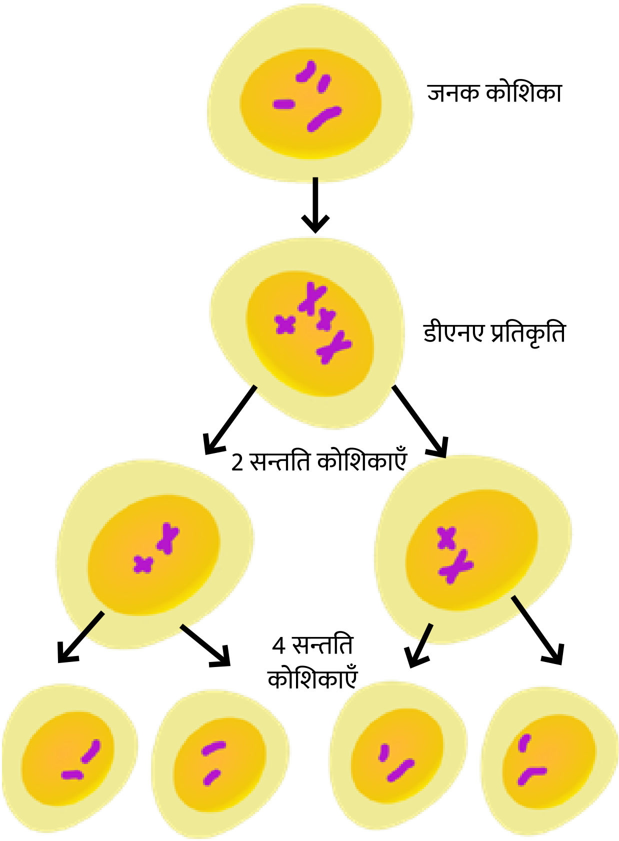

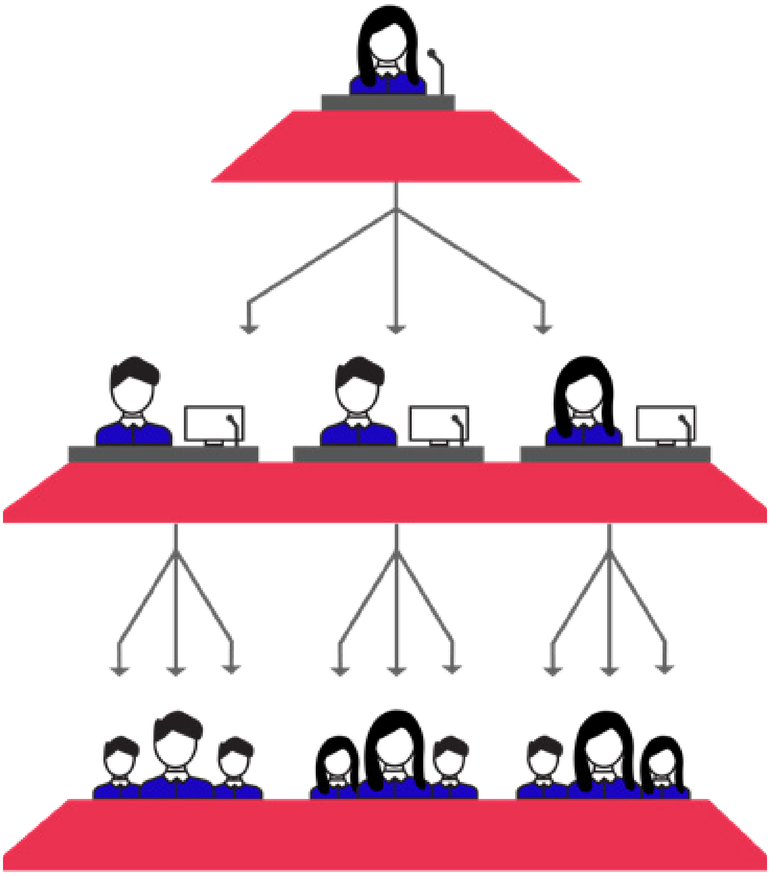

बारिश-बारिश

अबिरामी,
तीसरी, द येलो ट्रेन स्कूल, कोयम्बटूर,
तमिलनाडु

बारिश ने नाक में कर दिया है दम
लेकिन कुछ नहीं कर सकते हम
स्कूल के अन्दर भी पानी
स्कूल के बाहर भी पानी
इतनी बारिश किसने कर दी
कि डर गए सारे प्राणी

चित्र: निथुनिका,
चौथी, द येलो ट्रेन
स्कूल, कोयम्बटूर,
तमिलनाडु

मेरा पन्ना

गॉडजिला

सनव श्रीवास्तव,

दूसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

कभी-कभी मैं सोचता हूँ काश कि मैं एक गॉडजिला होता। बहुत भयानक, बहुत बड़ा। तब किसी से ना लगता मुझको डर।

चित्र: सनव श्रीवास्तव, दूसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मोहन सब्ज़ी वाला

आफरीन,

तीसरी, शासकीय प्राथमिक शाला, धर्मश्री, सागर, मध्य प्रदेश

एक किसान था। उसका नाम मोहन था। उसका एक बड़ा खेत था। वह उसमें सब्ज़ियाँ उगाता था। वो अपने खेत का बहुत ध्यान रखता था। एक दिन उसके खेत में बहुत सारी सब्ज़ियाँ होने लगीं। वो यह देखकर बहुत खुश हुआ। और रोज़ सब्ज़ियाँ बेचने जाता था। उसकी सब्ज़ियाँ बिकती भी थीं और वो उसकी खूब कमाई हो जाती थी। एक दिन उसकी सब्ज़ियाँ नहीं बिकीं तो वह दुखी होकर अपने घर लौट आया। और सोच में पड़ गया कि आज तो मेरी कमाई नहीं हुई। घर का सामान कैसे लाऊँ।

प्यारी दोस्त

आस्था, सातवीं, मंगलम
पब्लिक स्कूल महादेव, मण्डी,
हिमाचल प्रदेश

मेरा पन्ना

रोहन के घर के आँगन में एक बड़ा-सा सेगल का पेड़ था। एक दिन उसने घर के बरामदे के कोने में एक गिलहरी को बैठे देखा। वह हैरान था। और अन्दर ही अन्दर बहुत खुश भी। उसने गिलहरी कभी इतने पास से नहीं देखी थी। गिलहरी थोड़ा-सा ही भागी और उसने उसे पकड़ लिया। रोहन बहुत खुश हुआ।

वह उसे अपने घर के अन्दर ले गया। उसके मम्मी-पापा ने उसे समझाया, “बेटा, तुम इसे छोड़ दो। यह यहाँ मर जाएगी। इसे खुले में ही अपनी मर्ज़ी से रहने दो।” उसने मम्मी-पापा की बात मान ली। और थोड़ी देर उसके साथ खेलने के बाद वह उसे सेगल के पेड़ के नीचे रख आया। पर जब वह जाने लगा तो नन्ही गिलहरी टहनी से उतरकर उसके पीछे आने लगी।

रोहन ने सोचा कि शायद गिलहरी मेरे साथ ही रहना चाहती है। वह उसे साथ ले आया। उसने उसका नाम गिन्नी रखा। गिन्नी के खाने के लिए वह मक्की के दाने, रोटी और पानी कमरे में रख देता। उसने कमरे में दो-तीन बड़ी टहनियाँ भी खड़ी करके रख दी थीं ताकि गिलहरी को पेड़ों की कोई कमी महसूस न हो। दिन भर वह रोहन की कमीज़ या पैंट की जेब में या उसके नाइट सूट के खीसे में सोई रहती। यह गिन्नी की प्रिय जगह थी। रात को रोहन उसे अपने बिस्तर के सामने वाले मेज़ पर एक गरम शॉल के नीचे रखता।

फिर वह रात भी आई जब गिलहरी बार-बार अपने मेज़ से उतरकर रोहन के बेड पर चढ़ रही थी। रोहन उसे बार-बार उसके बिस्तर पर रख-रखकर थक गया था। पता नहीं वह क्यों ऐसा कर रही थी! रात भी काफी हो चुकी थी। सुबह जब रोहन उठा तो देखा कि गिन्नी अपने बिस्तर पर नहीं है। उसने यहाँ-वहाँ ढूँढ़ा। जब उसने अपने बिस्तर से कम्बल उठाया तो उसकी चीख निकल गई। गिन्नी बिस्तर पर चुपचाप लेटी थी। उसकी जीभ बाहर निकली थी। उसे हाथ में लेकर वह बहुत रोया। वह शायद उसके साथ सोने को आई होगी। और उसके करवट लेते ही वह उसके नीचे दबकर मर गई होगी। रोहन की प्यारी दोस्त उससे बिछड़ चुकी थी।

चित्र: आदित्य बंग, पहली, आनन्द निकेतन स्कूल, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र

चित्र: मनीषा कुमारी साह, ग्राम-गोंठी, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

चित्र: शिवानी, आठ साल, ग्राम - बड़हूलिया, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

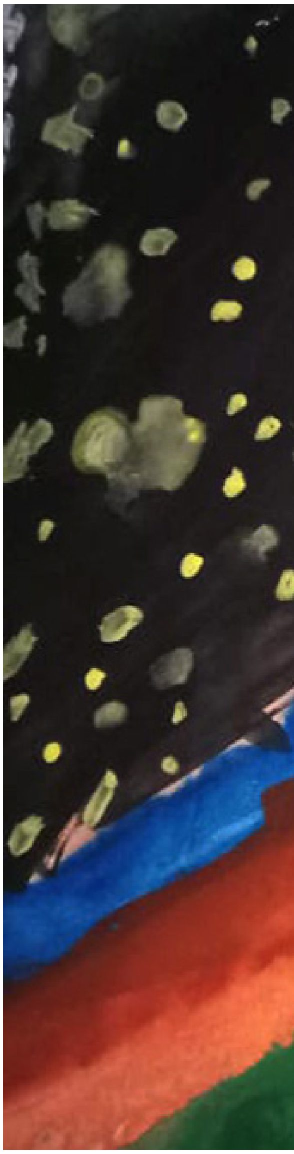

मामा की मेहनत

द्युति, पहली, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे मामा कहीं गए थे। लौटते वक्त हमारे घर भी आए। रात हो गई थी। भोजन करने के बाद जब वो जाने लगे तो देखा कि गाड़ी का पिछला पहिया पंचर हो गया है। जाना ज़रूरी था। तो मामा ने खुद ही पहिया बदलने की कोशिश की। उन्होंने गाड़ी की डिग्गी से जैक निकाला और गाड़ी के नीचे फँसाकर उसे खोलना शुरू कर दिया। इससे पहिया निकलने पर भी गाड़ी ऊपर ही टँगी रहती।

पहिए में पाँच पेंच थे जो रिंच से खुल गए थे। फिर डिग्गी से स्टेपनी निकालकर वो कसने लगे। परन्तु गाड़ी ढाल पर थी। इसलिए पहिया सेट नहीं हो पा रहा था। पापा टॉर्च लेकर खड़े थे। और गाड़ी के ड्राइवर साहब भी मेहनत कर रहे थे। फिर भी पहिया सैट नहीं हो रहा था। तब ड्राइवर ने जैक के बगल में तीन ईंट और रख दीं। और गाड़ी को और ऊँचा कर दिया। मामा और ड्राइवर साहब ने काफी मशक्कत से पहिया कस दिया और अपने घर चले गए।

चित्र: मेधांश शेखर, पाँच वर्ष, मोटिवेशन - द लर्निंग सेंटर, नोएडा, उत्तर प्रदेश से प्राप्त

मेरी गुड़िया

अक्षरा पाण्डेय, नर्सरी, दिल्ली पब्लिक स्कूल,
वाराणासी, उत्तर प्रदेश

मेरी गुड़िया, प्यारी गुड़िया
लगती हो आफत की पुड़िया
लहँगा-चुनरी, चूड़ी पहनकर
नाचती हो तुम ता-ता थैया

मेरा पन्ना

माथापच्ची

5. एक हवाई जहाज़ को दिल्ली से उदयपुर जाने में 1 घण्टा 20 मिनट का समय लगता है। पर लौटने में उसे सिर्फ 80 मिनट का समय लगता है। ऐसा क्यों?

6. तुम्हें इन दोनों बॉक्स की खाली जगहों में 1 से 9 के बीच की संख्याएँ भरनी हैं। ध्यान रखना कि तुम किसी भी संख्या को दो बार नहीं भर सकते। यहाँ तक कि जो संख्याएँ पहले बॉक्स में लिखी गई हों, उन्हें भी दूसरे बॉक्स में नहीं भर सकते।

	+		=	6
+	■	÷		
	×		=	3
=		=		
5		4		

	+		=	16
×	■	−		
	−		=	2
=		=		
72		1		

7. एक घड़ी की छोटी सुई 12 पर है। छोटी व बड़ी सुई के बीच 90 डिग्री का कोण बन रहा है। बताओ घड़ी में कितने बजे हैं?

8. एक व्यक्ति दिल्ली में अपने केबिन में बैठा। जब वह केबिन से बाहर निकला तो वो मुम्बई में था। यह कैसे हो सकता है?

फटाफट बताओ

खड़ा द्वार पर ऐसा घोड़ा, जिसने चाहा पेट मरोड़ा।

(ताला)

लोहे की हैं दो तलवारें
खूब लड़ें, पर साथ रहें।

(कैंची)

सिर पर ताज, गले में थैला।
मेरा नाम बड़ा अलबेला।

(मुर्गा)

घर है कि डिब्बे, लोहे के पाँव।
जल्दी बताओ उस बस्ती का नाम।

(रेलगाड़ी)

सिर कटे तो गीत सुनाऊँ, मध्य कटे तो सन्त बन जाऊँ
अन्त कटे तो बनूँ मैं संगी, सबके मन को भाऊँ

(संगीत)

बिना अन्न पानी सदा, चलती आठों धाम
धीरे-धीरे बोलती, बूझो उसका नाम

(घड़ी)

तुम भी जानो

माकी काजी 'सुडोकू के गॉडफादर'

सुडोकू पूरी दुनिया में पसन्द किया जाने वाला पज़ल है। तुम भी तो चकमक में दिए हुए सुडोकू हल करते होगे। ऐसा माना जाता है कि सुडोकू का आविष्कार अठारहवीं शताब्दी में हुआ। लेकिन सुडोकू को अपनी असली पहचान तब मिली जब 1980 में माकी काजी ने इसे पहली बार अपनी मैगजीन में छापा।

माकी का जन्म जापान में हुआ था। वे एक प्रिंटिंग कम्पनी में काम करते थे। इसी दौरान उन्होंने एक अमेरिकी मैगजीन में अंकों के खेल वाले इस पज़ल को पहली बार देखा। अपने दोस्तों के साथ मिलकर उन्होंने जापान की पहली पज़ल पत्रिका *निकोली* शुरू की।

इसी पत्रिका के ज़रिए अंकों का यह रोचक पज़ल 'सुडोकू' नाम से प्रसिद्ध हो गया। और इतना प्रसिद्ध हुआ कि इसकी वर्ल्ड चैंपियनशिप आयोजित की जाने लगी। और माकी काजी को 'सुडोकू का गॉडफादर' कहा जाने लगा। कुछ दिनों पहले उनसठ साल की उम्र में कैंसर की वजह से माकी गुज़र गए। और हमें दे गए अनगिनत सुडोकू। अगली बार जब तुम सुडोकू हल करो तो माकी को याद ज़रूर करना।

लेगो की दीवानगी

हाल ही में फ्रांस की पुलिस ने तीन चोरों को गिरफ्तार किया है जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लेगो की चोरी और खरीदफरोख्त करते हैं। यह चोर पोलैंड से फ्रांस आते, खिलौनों की दुकान से लेगो सेट चुराते और पोलैंड जाकर बेचते। कभी-कभी घरों में घुसकर भी लेगो सेट चुराते।

लेगो बच्चों और बड़ों दोनों को पसन्द है। मगर लेगो के कुछ ऐसे दीवाने भी हैं जो इस खिलौने की कालाबाज़ारी करते हैं। खासकर लेगो के उन सेट्स की जो सिर्फ दो सालों के लिए बाज़ार में आते हैं। उसके बाद यह सेट बाज़ार में नहीं मिलते हैं क्योंकि लेगो कम्पनी इन्हें वापिस ले लेती है।

इंटरनेट की वजह से पिछले 8 सालों में लेगो की बिक्री में खूब बढ़ोतरी हुई है। 2007 में 'कैफे कॉर्नर' नामक एक लेगो सेट निकाला गया था। उस समय इसकी कीमत थी लगभग तेरह हज़ार रुपए। पिछले साल यही सेट दो लाख उन्नीस हज़ार रुपए में बिका।

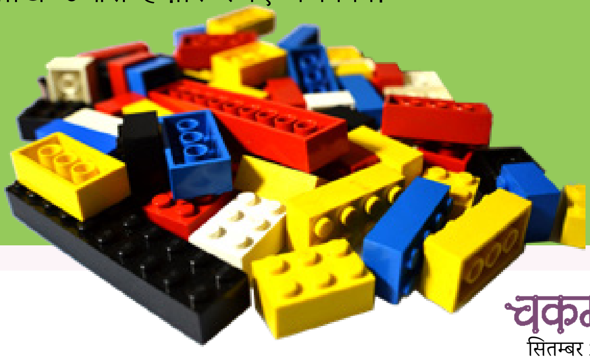

1		2		3			4	5
		6				7		
				8	9			
	10		11				12	
			13				14	
15						16		
				17				18
	19					20		
21								

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

चित्र पहेली

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

सुडोकू 46

1		5	2		8		6	
		6	4	5	1		9	7
8	7			6	9			5
	1			9			2	
		2		3	7	9	5	
		9	1	2	4		7	3
9		1			3	5	4	
								9
							8	2

जवाब माथापच्ची

1.

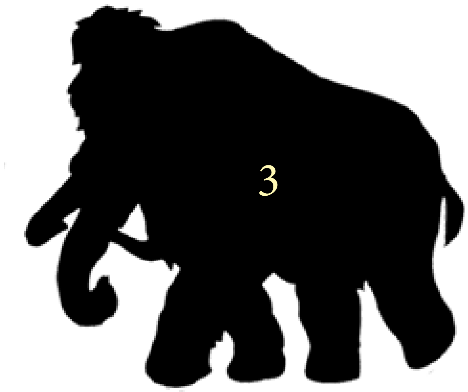

2.

पहला व्यक्ति- 3 पूरी भरी हुई, 1 आधी भरी हुई और 3 खाली बोतल
दूसरा व्यक्ति- 3 पूरी भरी हुई, 1 आधी भरी हुई और 3 खाली बोतल
तीसरा व्यक्ति- 1 पूरी भरी हुई, 5 आधी भरी हुई और 1 खाली बोतल

3. 8 किलोमीटर

4.

गु	पी	टी	दी	ति	ल	चि	ट्टा	कें
कॉ	ब	वो	म	खा	सी	ह	छ	चु
क	ची	रैं	क	छि	प	तं	गा	आ
रो	टीं	न	ला	सो	प	लो	ति	का
च	त	तै	या	हू	ले	क	त	ख
ख	झीं	गु	र	पि	स्सू	अ	ली	ट
खा	ट	क	न	ख	जू	रा	का	म
घों	हो	म	क	ड़ी	ब	टि	न	ल
घा	ची	ते	ल	चा	को	घ	ड्डा	हा

5. 1 घण्टा 20 मिनट और 80 मिनट बराबर ही हैं।

6.

2	+	4	=	6
+	[redacted]	÷		
3	×	1	=	3
=		=		
5		4		

9	+	7	=	16
×	[redacted]	−		
8	−	6	=	2
=		=		
72		1		

7. 12 बजकर 15 मिनट

8. क्योंकि वो पायलट था।

अगस्त की चित्रपहेली का जवाब

1 हा	थ	2 रि	क्शा		3 पा		4 बा	
थी		मो		5 क	न	6 ख	जू	7 रा
	8 क	ट	9 क			ण्ड		ह
10 प	त्नी		ने		11 गो	ह		गी
		12 सु	र	13 मा		14 र	15 डा	र
16 चि	ल्ल	र		17 न	ग		य	
ट		न		चि		18 पा	ल	19 क
20 क	च्छा		21 इ	त्र				ला
नी		22 बि	ल्ली			23 च	टा	ई

सुडोकू-45 का जवाब

9	4	6	8	2	1	7	3	5
3	1	7	5	4	9	8	6	2
5	8	2	7	6	3	1	4	9
8	5	3	9	1	2	4	7	6
2	6	9	4	3	7	5	8	1
4	7	1	6	8	5	9	2	3
1	2	8	3	5	4	6	9	7
7	3	4	1	9	6	2	5	8
6	9	5	2	7	8	3	1	4

भूल भुलैया

कनक शशि

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

मशहूर डिस्को डाँसर - भारतीय डाँसिंग मेंढक -
की तरफ से उभरते हुए डाँसरों के लिए सलाह:

रोहन चक्रवर्ती
अनुवाद: सजिता नायर

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन